## पद ११४

(राग: कालंगडा - ताल: धुमाळी)

संत (भक्त) शिरोमणि खरा परंतु तें नाहीं बा तें नाहीं।।धु.।। देवता सिद्धि साधणें। जग मायिक हें जाणणें। अवधें ब्रह्मरूप अनुभवणें। जोवरी हें बोलणें तोवरी। तें नाहीं बा तें नाहीं ॥१॥ नवविधा भक्ति स्थापिती। एकनिष्ठ देह झिजविती। नाचती उडती डोलती। सत्यलोक (स्वर्गलोक) वैकुण्ठ (कैलास) मिळें परि ते नाहीं बा तें नाहीं।।२।। देह हा पंढरपुर शोधिला। विठ्ठल रखुमाई चित्कला। स्नान (नाहणें) प्रेम (ज्ञान) चंद्रभागेला। अशी यात्रा न घडे वैष्णव परि। तें नाहीं बा तें नाहीं।।३।। भजा आत्मा चिन्मार्ताण्डा। लाविला मुक्त पदीं झेण्डा। सोडा अनंत मत पाखांडा। सकलमती शिव तुम्हां नको जरि। तें नाहीं बा तें नाहीं।।४॥